Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मुंशी प्रेमचन्द के लघु उपन्यास, निर्मला, प्रतिज्ञा का अनुशीलन

डॉ. अर्चना बापना*

* सहा. प्राध्यापक, एडवास महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – लघु उपन्यास साहित्य की ऐसी विद्या है जो स्वरूप की दृष्टि से उपन्यास से छोटी होती है, परन्तु कथावस्तु की दृष्टि से अपने आप में पूर्ण होती है। जिसका प्रभाव वृहत् उपन्यासों के समान ही होता है। हिन्दी साहित्य जगत में भी लघु उपन्यासों से पृथक अस्तित्व के स्वीकार कर लिया गया है। लघु उपन्यास और वृहत उपन्यास में आकार गत अन्तर प्रमुख है। साहित्य में भी इसके पृथक अस्तित्व को स्वीकार किया गया है।

डॉ. घनष्याम मधुप के अनुसार–'लघु उपन्यास में व्यक्ति या समाज के किसी एक कोण का गहन एवं सूक्ष्म चित्रण किया जाता है। प्राय: लघु उपन्यास लेखक के जीवन अनुभवों के संवदेन जन्य चित्र होते हैं। दो तीन पात्रों को लघुकथा फलक के आधार पर अभिव्यक्ति की संयतता से चित्रण करना ही लघु उपन्यास को उपन्यास से पृथकत्व प्रदान करता हैं।'

उपन्यास के समान ही लघु उपन्यास में कथानक, पात्र, चरित्र–चित्रण, देशकाल, वातावरण, भाषा–शैली, उद्देश्य आदि होते है। जिस प्रकार उपन्यास में लेखक अपनी अभिव्यक्ति सशक्त रूप से करते हुए अपनी मान्यताओं और उद्देश्यों को पूर्ण करता है। वह अपनी कृति द्धारा बड़ी प्रखरता, स्पष्टता और साहसिकता से अपनी बात स्पष्ट करता है, उसी प्रकार जीवन मूल्यों की स्थापना और मान्यताओं को अभिव्यक्त करने में लघु उपन्यास भी श्रेष्ठ है, वे भी अपनी बात ज्यादा स्पष्टता और प्रखरता से करते हैं।

आज का मानव जीवन तनावपूर्ण हो गया है व विषम अन्तर्द्वन्द्वों से भरा हुआ है, उलझनपूर्ण तथा अवसाद से भरा हुआ है ऐसे में लेखक के लिए मानव जीवन के हर पहलू को पूर्ण समग्रता से प्रस्तुत करना अत्यन्त दुष्कर कार्य हो गया है। इसी दिशा में लघुउपन्यासकार ने जीवन के खण्ड चित्र को खण्डकाव्य की तरह अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करना आरम्भ किया हैं। आकारगत सीमितता होने के कारण लघु–उपन्यास आज श्रेष्ठ स्थान का अधिकारी हो गया है। इसका महत्व साहित्य के क्षेत्र में निर्विवाद है।

प्रेमचन्द ने गबन, गोदान जैसे उपन्यासों की सृष्टि कर साहित्य जगत में तहलका मचा दिया था। उनके दोनो उपन्यास ने ग्रामीण परिवेश को पूरी तरह स्पष्ट किया। उस समय की परिस्थिति, देषकाल, वातावरण को बड़े ही प्रभावोत्पादक रूप में प्रस्तुत किया जिससे इस कृति ने साहित्य जगत में अपना सर्वश्रेष्ठ स्थान बनाया परन्तु वहीं पर उन्होंने निर्मला जैसे लघु उपन्यास की भी सृष्टि की, जिसका स्थान भी साहित्य जगत में गबन, गोदान की दृष्टि से कहीं कम नहीं है। लेखक ने गबन और गोदान में जीवन की पूर्णता को स्पष्ट किया वहीं 'निर्मला' प्रतिज्ञा जैसे लघु उपन्यासों में उन्होंने जीवन के एक खण्ड चित्र को प्रस्तुत किया जिससे यह उपन्यास लघु होते हुए भी प्रभाविता में कोई कमतर नहीं है।

प्रेमचन्द्र कृत निर्मला – प्रेमचन्द्र का सर्वप्रथम लघु उपन्यास सन् 1928 में प्रकाशित हुआ। यह केवल उपन्यास का प्रारम्भ ही नहीं है, अपितु प्रेमचंद के उपन्यासों में बदलाव को भी उपस्थित करता है। इसमें लघु उपन्यास का पूर्ण स्वरूप नहीं परन्तु उसका संकेत अवश्य है।

उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचन्द्र का आगमन हुआ तो क्रांति हो गई। विषय और शिल्प सभी में परिवर्तन नजर आने लगे। युग की समस्याएँ का प्रस्फुटन उनकी औपनयासिक कृतियों में दिखाई देने लगा। 'निर्मला' का कथानक सामाजिक समस्या पर आधारित है। इसमें 'निर्मला' का नाम की एक किशोर कन्या और उसके वृद्ध पति के फलस्वरूप उत्पन्न हुई जटिलताओं और विडम्बनाओं का चित्रण है। दहेज की व्यवस्था न हो पाने की वजह से निर्मला के पिता निर्मला का ब्याह अपने प्रथम निश्चयानुसार डॉ. सिन्हा से न कर सके जिससे उन्हें विधुर वृद्ध वकील तोताराम की शरण लेनी पड़ी जो तीन पुत्रों के पिता और शरीर से नितान्त असमर्थ हो चुके थे। वकील तोता राम के तीन पुत्र मंसाराम, जियाराम, सियाराम है। तोताराम का शंकालु हृदय निर्मला के सतीत्व पर भी सन्देह करने लगा। अपनी कामुकता के प्रवाह में वे जो मानसिक पाप करने लग जाते हैं। उसका परिणाम यह हुआ कि निर्मला का सम्पूर्ण जीवन ही विशाक्त हो गया। पुत्र मंसाराम जिस पर पिता को यह सन्देह हो गया था कि उसका अपनी माता निर्मला के साथ अनुचित शारीरिक सम्बन्ध है वे उसको घर से बाहर निकाल देते है। मंसाराम की कारूणिक मृत्यु हो जाती है। निर्मला का मातृ – स्नेह उमड़ पड़ता है परन्तु वह लाचार है। निर्मला और मंसाराम एक दूसरों को प्राणों से भी अधिक प्यारे थे पर दोनों का पारस्परिक प्रेम मांसल नहीं बल्कि सात्विक था। अभागिनी निर्मला ने अपने मातृत्व प्रेम को मंसाराम में केन्द्रित कर लिया तथा मंसाराम ने भी माँ के वात्सल्य को निर्मला में मूर्तिमान पाता था। शंकालु प्रवृत्ति की वजह से अन्त में दोनों लड़के भी हाथ से निकल जाते हैं। एक विषपान कर लेता है, दूसरा साधु के साथ निकल जाता है। फिर दोनों लड़कों की खोज में तोताराम भी घर से निकल जाते है और एक छोटी सी बच्ची को छोड़कर निर्मला की भी मृत्यु हो जाती है। निर्मला की लाश उठाने के समय लौटे, डॉ. सिन्हा जो निर्मला के होने वाले पहले पति थे, का निर्मला के निकट आने के कारण पत्नी की फटकार को सह न सकने के कारण वही पर वे आत्मघात कर लेते है।

प्रस्तुत उपन्यास में अनेक सामाजिक घटनाएँ हैं जिनके मूल में अनमेल विवाह तथा देहज आदि जैसी कुप्रथाएँ ही है जिनके कारण न जाने कितने

भारतीय, उसके बच्चे घुल–धुलकर मृत्यु के मुँह में समाहित हो जाते हैं।

'निर्मला' भारतीय समाज की एक दर्दनाक कारूणिक कहानी है, जिसमें अर्थ से अधिक महत्व सामाजिक कुसंस्कारों को दिया गया है। कथानक संक्षिप्त है। बहुत संगठित है और अन्य उपन्यासों की अपेक्षा तीव्रता से घटित होता है। निर्मला उपन्यास में पात्रों की संख्या कम है। इसमें निर्मला तोताराम, मंसाराम, उदयभानु कल्याणी, कृष्णा आदि ही इस उपन्यास के प्रमुख और गौण पात्र है। निर्मला इसकी नायिका है इसी को लेकर कथानक का निर्माण हुआ है। बाकि अन्य पात्र उसके चरित्र को उभारते है।

निर्मला समाज में नारियों के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है जो दहेज की कुप्रथा, अनमेल विवाह और असंगतियों के कारण जीवन भर असंतोष, मानसिक अन्तर्द्वन्द और विषम परिस्थितियों से जुझता रहता है और उसी में उसकी मृत्यु हो जाती है। उसकी मृत्यु क्रांति का संदेश देती है। **उपन्यास में परिस्थितियों पर व्यंग्य है। प्रेमचन्द ने अन्त में निर्मला के मुख से कहलाया**

'इसका विवाह सुपात्र के हाथ से करना' इस प्रकार अन्त समस्या का कोई समाधान प्रस्तुत नहीं करता। अत: पूरे उपन्यास में कथानक का विन्यास चरित्रों के घात–प्रतिघात से हुआ है। मनोविज्ञान की प्रवृत्तियों का सहारा अधिकतर लघुउपन्यासों में लिया गया है। निर्मला भी इसका अपवाद नहीं है। प्रेमचन्द का हर पात्र एक जीवंतता का बोध करवाते हैं। पात्र काल्पनिक नहीं बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि पात्र अपने आसपास के है। अनमेल विवाह की शिकार निर्मला के अतृप्त मन का चित्रण प्रेमचंद ने किया है – वह लेटे–लेटे देखती है– जियाराम उसके आभूषण चुराकर भाग रहा है। वह चाहती तो शोर मचा सकती थी, पर नहीं मचाती क्योंकि वह विमाता थी। वह कहती है 'मुझमें सारी बुराईयां ही बुराईयां है, तुम्हारा कोई कसूर नही। विमाता का नाम ही बुरा होता है। अपनी माँ विष भी खिलाये तो अमृत है, मैं अमृत भी पिलाऊँ तो विष हो जाएगा। तुम लोगों के कारण मैं मिट्टी में मिल गई।'

निर्मला के रूप में भारतीय नारी मर्यादा का जो चित्र प्रेमचन्द्र जी ने प्रस्तुत किया है उसकी मसोस एवं मूक वेदना से सहृदय पाठक करूणाद्र हुए बिना नहीं रह सकता।

इस तरह कथानक का गठन, घटनाओं का शीघ्रता से घटित होना, कम पात्र होना, संवादों की संक्षिप्तता, वातावरण का कम चित्रण और उद्देश्य का कथानक में घुला होना ऐसे तत्व हैं जो इसे लघु उपन्यास कहलाने में सहायक हैं।

डॉ. गणेशन के अनुसार – 'यद्यपि सेवासदन तथा प्रेमाश्रम की तुलना में इसका विषय बहुत सीमित है, तो भी समस्या के गहरे अध्ययन और मनोभावों के सूक्ष्मविश्लेषण की दृष्टि से यह प्रेमचन्द्र का सबसे सुन्दर उपन्यास है। कई सांयोगिक घटनाओं के तथा अन्य असंगतियों के होने पर भी निर्मला के पात्रों का क्रमिक विकास विशेषकर उनके मनोभावों का विकास अत्यन्त स्वाभाविक बना है। अनावश्यक तथा विशाल वातावरण के अभाव के कारण श्निर्मलाश् के गठन में जो दृढता आयी है। वह प्रेमचन्द के किसी अन्य उपन्यास में नहीं है।'

इस उपन्यास को हिन्दी का सर्वप्रथम मनोवैज्ञानिक उपन्यास होने का गौरव भी प्राप्त है।

प्रेमचन्द कृत प्रतिज्ञा – 'प्रतिज्ञा' उपन्यास प्रेमचन्द का दूसरा लघु उपन्यास है। यह उपन्यास भी सामाजिक समस्या को आधार बनाकर लिखा गया है। कथावस्तु की दृष्टि से इस उपन्यास में कोई विशेष नवीनता नहीं है। कथा वस्तु का मूलकेन्द्र बिन्दु है विवाह–इसमें प्रेमचन्द ने यदि एक ओर पूर्णा के माध्यम से नारी वैधव्य की तरफ संकेत किया है और विवशता पूर्ण जीवन को उभारा है तो दूसरी और सुमित्रा के माध्यम से नारी के विद्रोही रूप को भी प्रस्तुत किया है जो पुरुष अत्याचारों का निरन्तर विरोध करती रहती है।

अमृतलाल उपन्यास के प्रारम्भ से ही यह प्रतिज्ञा करते दिखाई देते हैं कि वह विधुर हाने के कारण किसी विधवा से विवाह करना चाहते हैं। यही सूत्र इस उपन्यास के मूल में है। अमृतलाल वनिता आश्रम की स्थापना करते है और यह कहते हैं कि 'मैं विवाह करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर चुका हूँ परन्तु विवाह मैंने किसी विधवा के साथ नहीं किया बल्कि आश्रम के साथ ही किया है।'

अमृतराय के अलावा कमलाप्रसाद, दाननाथ, सुमित्रा, पूर्णा और प्रेमा आदि पात्रों द्वारा कथा को बुना गया है। कमलाप्रसाद और सुमित्रा के वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित इस उपन्यास की कथा का दूसरा तत्व विकसित होता है। कमलाप्रसाद से ही पूर्णा की कथा भी जुड़ी हुई है। घटना की स्थिति इस हद तक पहुँच जाती है कि पूर्णा आत्महत्या करने को विवश हो जाती है। अन्तत: समझा बुझाकर अमृतराय पूर्णा को वनिता आश्रम में भेज देता है। वहीं रहकर वह कृष्ण भक्ति में अपना जीवन लगा देती है। स्वयं तो बच जाती है और एक पति पत्नी के जीवन को नष्ट होने से बचा लेती है। इधर – प्रेमा के पिता प्रेमा का विवाह दाननाथ से कर देते हैं। दाननाथ पहले अमृतराय के मित्र रहते हैं। परन्तु बाद में धार्मिक मतभेद के कारण उनमें वैमनस्य हो जाता है। कमलाप्रसाद की नीचता के कारण दाननाथ को समाज में लज्जित होना पड़ता है। इसलिए अपने रास्ते को बदलकर वे अमृतराय से पुन: मित्रता बढ़ा लेते हैं। इन्हीं घटनाओं के साथ आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में स्त्री के अधिकार और उसके स्थान की चर्चा भी वे करते है। 'प्रतिज्ञा' उपन्यास की कथावस्तु में ज्यादा विस्तार नहीं है। पात्र संख्या भी ज्यादा नहीं है। पर जितने भी पात्र है वे मध्यमवर्गीय समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसमें मुख्यत: दाम्पत्य जीवन, विधवा विवाह, स्वच्छन्द प्रेम, स्त्री शिक्षा आदि विषयों पर लेखक ने विचार किया है। इसके हर पात्र का सम्बन्ध किसी न किसी समस्या से है। पूर्णा वैधव्य को झेलती है। लेकिन। कमलाप्रसाद की प्रवृत्ति उसे चचंल बना देती है। सुमित्रा विद्रोही नारी है। अमृतराय दाननाथ अन्य पात्र हैं जो उपन्यास की मूल समस्या के आदर्श और यथार्थ पक्ष को उभारते हैं। पात्र संख्या कम है, कथावस्तु में भी ज्यादा विस्तार नहीं है, उद्देश्य जरूर इकहरा नहीं है अत: यह उपन्यास की अपेक्षा लघु उपन्यास की परम्परा के विकास को सूचित करता है।

1970 से 1980 के बीच के उपन्यासों में निम्नवर्गीय व मध्यवर्गीय लोगो की अर्थिक स्थिति परम्परागत रूढिवादिता पारिवारिक स्थिति का चित्रण है।

अत: शिल्प की दृष्टि से जितने प्रयोग उपन्यास साहित्य में हुए उससे अधिक ओर ज्यादातर प्रयोंग लघु उपन्यास विधा में हुए।

वर्तमान युग तक आते–आते उपन्यास साहित्य ने शिल्प कला के कई सौपान तय किए है और आज हमें शिल्प की दृष्टि से अत्यन्त उत्कृष्ट रचनाएँ हिन्दी उपन्यास साहित्य में देखने को मिलती है, यदि यह कहा जाय कि शिल्पगत कलात्मक स्वरूप का विकास उपन्यास की अपेक्षा लघु उपन्यास में अधिक हुआ है तो अनुचित न होगा।

वर्तमान समय में उपन्यास बर्हिजगत की वस्तु ही नहीं अन्तर्जगत की वस्तु है। उपन्यास का मुख्य केन्द्र उसकी कथावस्तु है, जिससे उपन्यास का

ताना–बाना बुना जाता है, परन्तु कथावस्तु के साथ–साथ अन्य तत्वों को भी अपने में समाहित किया जाता है और अलग–अलग तत्व के अस्तित्व की अनुभूति भी पूरी तरह से होती है। वृहत उपन्यासों की तरह निर्मला, प्रतिज्ञा जैसे लघुउपन्यासों में भी हमें अन्य तत्वों की अलग–अलग अनुभूति बराबर होती है।

अत: निर्मला, प्रतिज्ञा जैसे लघु उपन्यास की सृष्टि मुंशी प्रेमचन्द ने की जिसका महत्व उनके वृहत उपन्यासों से कुछ कम नहीं। शिल्प व कथानक सभी दृष्टियों से उनके लघु उपन्यास साहित्य की महत्वपूर्ण विधा बन गयें।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. डॉ. घनश्याम मधुप, हिन्दी के लघु उपन्यास पृ.60
2. 'निर्मला' प्रेमचन्द का लघु उपन्यास है शिल्प दृष्टि से इसमें उन उपन्यासों की अपेक्षा संगठनात्मकता मिलती हैं। डॉ. प्रताप नारायण टण्डन हिन्दी उपन्यास उद्‌भव और विकास पृ. 116
3. प्रेमचन्द – निर्मला पृ. 175
4. डॉ. गणेशन – हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन पू. 67
5. प्रेमचन्द – प्रतिज्ञा पृ. 149

****